शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

फिल्मी पर्दा 'नायक' प्रधान, छोटा पर्दा, 'नायिका' प्रधान

कौशल त्रिपाठी
प्रवक्ता-भास्कर पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

फिल्मी पर्दा 'नायक' प्रधान, छोटा पर्दा, 'नायिका' प्रधान

- कौशल त्रिपाठी

शोधार्थिनी, रश्मि गौतम, प्रवक्ता-जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, छत्रपति शाहुजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने डॉ० रमेश चन्द्र त्रिपाठी (पूर्व विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ) के निर्देशन में 'दूरदर्शन' पर प्रसारित महिलाओं के कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन' (शहरी परिवेश-लखनऊ के संदर्भ में) सम्पन्न किया है। प्रस्तुत है, उनके शोध प्रबंध की सम्यक समीक्षा।

विषय संकेतः- *दूरदर्शन, महिला कार्यक्रम, महिला पत्रकारिता*

यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जहाँ फिल्मी पर्दा 'नायक' प्रधान है वहीं छोटा पर्दा 'नायिका' प्रधान। छोटे पर्दे पर, चाहे वह समाचारों का प्रस्तुतिकरण हो, चाहे चर्चा-परिचर्चा का संचालन, दूर-दराज के क्षेत्रों से रिर्पोटिंग हो और या घर-घर में प्रचलित धारावाहिकों की श्रृंखला, महिलाओं की उपस्थिति गौरवपूर्ण है। इसके पीछे का एक प्रमुख कारण है इसके दर्शक जिनमें महिलाओं विशेषकर गृहिणीयों की संख्या सबसे ज्यादा है। आज छोटा पर्दा उनके लिए एक ऐसा माध्यम है जो एक नये संसार से उनका परिचय कराता है। जहाँ वे स्वतंत्र हैं। अपनी इच्छाओं से अपने पसंदीदा पात्रों और चेहरों से जुड़ने के लिए। कुछ महिला पात्रों ने तो इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज कई सैटेलाईट चैनलों की भरमार है। नित नये फॉरमेटों का प्रचलन हो रहा है। रियेल्टी शो की बाढ़-सी आ गई है। इतने चैनल आ गये हैं। कि किसी के लिए मुमकिन नही कि एक साथ सबके नाम बता सके। व्यावसायिक मूल्यों और भौतिकवाद पर केन्द्रित इनकी नीतियों ने एक नये समाज की रचना कर दी है। जहाँ हर वस्तु, व्यक्ति, विचार, विषय आदि की परिभाषा केवल आर्थिकता के हिसाब से की जाती है। आज का सैटेलाइट मीडिया लोगों को पाठक न समझ कर केवल उपभोक्ता समझता है। विकासवाद की ऐसी आँधी को इसने हवा दी है की उसमें मानवतावाद कहीं उड़ गया है।

इस माहौल में वो पीढ़ी जो आज अपनी उम्र के चौथे या पाँचवें दशक में है 'दूरदर्शन' की उस ध्वनि को कभी-कभी याद करती है तो 'सत्यम शिवम सुन्दरम्' की धुन के साथ मन-मस्तिष्क पर छा जाती थी, भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहजने, पालने एवं पोषित करने के साथ ही लोगों में नैतिक मूल्यों के संवर्धन का भार जिसने बड़ी गंभीरता के साथ उठाया एवं उसे निभाया। मनोरंजन की प्रधानता होने के बावजूद सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विषयों के साथ ही समसामयिक विषयों की जानकारी को लोगों तक पहुँचाने में इसका प्रमुख योगदान रहा है। दूरदर्शन ने व्यावसायिक उद्देश्यों को हमेशा दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय उद्देश्यों को प्राथमिकता दी है। आज जिस व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में सभी सैटेलाइट चैनल दौड़ रहे है। दूरदर्शन उससे हमेशा अपने आपको दूर रखा है। इन्ही कारणों से शोधार्थी ने दूरदर्शन को अपने अध्ययन का विषय बनाया है।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि दूरदर्शन ने अपने दर्शकों में विश्वसनीयता खो दी है या वह आज निष्प्राण हो गया है। आज भी दूरदर्शन की 'पहुँच और अभिगम' अन्य चैनलों की अपेक्षा अधिक है। डॉ0 रश्मि गौतम का यह शोध 'दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं के कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन (शहरी परिवेश-लखनऊ के संदर्भ में)' में इसी तथ्य को प्रमाणित करता है कि सैटेलाइट चैनलों की इस भीड़ में दूरदर्शन की प्रासंगिकता निर्बाध रूप से विद्यमान है। विशेषकर महिला श्रोताओं के बीच आज भी इसकी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

फिल्मी पर्दा 'नायक' प्रधान, छोटा पर्दा, 'नायिका' प्रधान

कौशल त्रिपाठी
प्रवक्ता-भास्कर पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लोकप्रियता संशय रहित है। शोध में दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं के कार्यक्रमों का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है।

शोध की महत्ता-

पहले के समय में जब संयुक्त परिवार की परम्परा अधिक थी, घर के बूजुर्ग लोग परिवार की धुरी का काम करते थे। परिवार को एक साथ बाँधे रखने एंव उनमें नैतिक मूल्यों के विकास की जिम्मेदारी अघोषित रूप से उनकी होती थी। वर्तमान में विशेषकर शहरों में एकल परिवारों की संख्या अधिक है। ऐसे परिवारों में एक महिला के रूप में स्त्री की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। नित नये बदलावों के बीच अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं पारिवारिक मूल्यों को बनाये रखने की जिम्मेदारी उन पर है। ऐसी परिस्थितियों में महिला के लिये आवश्यक है कि वह घर के बाहर हो रहे हर-एक परिवर्तनों से परिचित रहे और सहज रहें। छोटा पर्दा और उसमें में भी विशेषकर दूरदर्शन अपने महिला केन्द्रित कार्यक्रमों द्वारा उन्हें उनके लक्ष्य प्राप्ति में सहायक का काम करता है। डॉ0 रश्मि गौतम का शोध इसी पहलु पर विशेष रूप से केन्द्रित है कि दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को महिला श्रोता और विशेषकर शहरी क्षेत्र में रहने वाली एकल परिवारों की महिलाओं पर इनका क्या प्रभाव है? और साथ ही इनके कार्यक्रमों के प्रति उनका कैसा व्यवहार है। कौन से अन्य कारक है जो इस संपूर्ण प्रक्रिया को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। शोध में ऐसे ही अनेक विषयों पर गंभीरता के साथ अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य-

दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं से संबन्धित कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए डॉ0 रश्मि गौतम ने अपने शोध निम्नलिखित उद्देश्यों को आधार बनाया

1. महिलाओं को घरेलू कार्यों से लेकर विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी पदों पर कार्य संबंधी सूचनाएं प्राप्त हो रही है कि नहीं।
2. कार्यक्रमों के अन्तर्गत महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों को दी जाने वाली प्राथमिकताएँ।
3. महिलाओं पर ऐसे कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन।
4. ऐसे कार्यक्रमों से महिलाओं का सर्वोन्मुख विकास हो रहा है या नहीं।
5. ऐसे कार्यक्रमों से प्राप्त सूचनाएँ रोजगार सृजन में सहायक है। या नहीं।
6. व्यक्तित्व विकास एवं स्वयं को पहचानने में सहायक है या नहीं।
7. लिंग समानता को प्रोत्साहित करती है। कि नहीं।
8. पुरुषों द्वारा महिलाओं के शोषण को उजगार करने में सक्षम है या नहीं।
9. महिलाओं को अत्याचारों के खिलाफ लड़ने हेतु प्रोत्साहित करने में सहायक है या नही।
10. महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं सजगता बढ़ाने में सहायक है या नहीं।
11. महिलाओं को स्वास्थ्य, सामाजिक, पारिवारिक दायित्वों संबंधी विभिन्न प्रकार के कानूनों की जानकारी देने हेतु कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है कि नहीं।
12. महिलाओं को स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर, सक्षम बनाने हेतु महिलाओं संबंधी कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है या नही।
13. सरकार की महिलाओं संबंधी नीतियों एवं योजनाओं की जानकारी दी जाती है या नही।

शोध प्रविधि-

शोधार्थी ने अपने इस शोध अध्ययन ''दूरदर्शन पर प्रसारित महिलाओं के कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन'' (शहरी परिवेश-लखनऊ के सन्दर्भ में) में लखनऊ (शहरी परिवेश) के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों को निदर्शन विधि के द्वारा चुनाव किया है जिसके अन्तर्गत-अलीगंज, इन्दिरा नगर, विकास नगर, आलमबाग, सरोजनी नगर, कृष्णा नगर, अमीनाबाद, निराला नगर, बाबूगंज, खुर्रमनगर, बालागंज, रहीम नगर, त्रिवेणी नगर, चा दगंज, महानगर, डालीगंज आदि क्षेत्रों से निदर्शन विधि का प्रयोग करके व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं प्रश्नावली सूची के माध्यम से क्षेत्रीय स्तर पर प्राथमिक आकड़ें प्राप्त किये हैं। 21 वर्ष से 35 वर्ष से अधिक आयु-वर्ग

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

फिल्मी पर्दा 'नायक' प्रधान, छोटा पर्दा, 'नायिका' प्रधान

कौशल त्रिपाठी
प्रवक्ता-भास्कर पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

की महिलाओं को उपयुक्त सेम्पल विधि से अध्ययन हेतु क्षेत्रानुसार चयनित किया है। इसके अन्तर्गत दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों संबंधी राय जानने हेतु 100 महिलाओं का व्यक्तिगत साक्षात्कार तथा 200 महिलाओं पर सर्वेक्षण किया है।

शोध के निष्कर्ष-

डॉ0 रश्मि गौतम द्वारा संपन्न शोध से यह साफ परिलक्षित होता है कि सैटेलाइट चैनलों की भीड़ के बीच आज भी दूरदर्शन ने अपनी लोकप्रियता बना रखी है। इसका एक प्रमुख कारण है कि दूरदर्शन केवल मनोरंजन परक कार्यक्रमों तक ही सीमित न रह कर अन्य उपयोगी विषयों पर भी लगातार कार्यक्रम उपलब्ध कराता रहता है। विश्वसनीयता, सांस्कृतिक अनुकूलता एवं सद्भावना बढ़ाने में दूरदर्शन की भूमिका अग्रणी रही है। एकता में अनेकता का भाव एवं सभी वर्गों के श्रोताओं के अनूरूप कार्यक्रमों का प्रसारण दूरदर्शन पर निर्बाध रूप से जारी है। संपूर्ण शोध में से कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष इस प्रकार है।

शोध में यह तथ्य निकल कर आया है कि दूरदर्शन (विशेष रूप से डी0डी0 1 और डी0डी0 न्यूज) को आधे से अधिक महिला दर्शक देखती हैं। दोपहर में 12:00 से 04:00 एवं शाम को 6:00 से 10:30 के समय ज्यादातर महिला दूरदर्शन देखती हैं। अधिकतर महिलाएँ प्रसारित कार्यक्रमों को पसन्द करती हैं। महिलाएँ मानती हैं कि दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम लाभप्रद एवं सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देते है साथ ही ये व्यक्तित्व विकास में सहायक हैं। महिलाएँ मानती हैं कि दूरदर्शन के कार्यक्रम से उनके शिक्षा के स्तर एवं जीवन शैली में बदलाव आया है। 92 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि आत्मनिर्भरता की भावना का संचार करने में दूरदर्शन के कार्यक्रम सहायक है। महिलाओं का मानना है कि दूरदर्शन के कार्यक्रम से उनकी वेश-भूषा में बदलाव आया है। महिलाएँ सबसे अधिक महिला धारावाहिकों को पसन्द करती हैं। 'आँखों देखी' एवं 'कल्याणी' कई महिलाओं की विशेष पसन्द है। कई महिलाओं ने माना है कि सकारात्मकता के साथ ही कभी-कभी नकारात्मक प्रभाव भी उन पर पड़ता है। इसी कारण दूरदर्शन को चाहिये कि अपने कार्यक्रमों में सकारात्मक पात्रों को सबल एवं दर्शकों के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाले कार्यक्रमों को बनाना चाहिए। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में से 21 प्रतिशत महिलाएँ सूचना संबंधी, 28 प्रतिशत महिलाएँ मनोरंजन संबंधी, 24 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षा संबंधी और 19 प्रतिशत महिलाएँ स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों को देखना पसन्द करती हैं। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में परिवेश के संदर्भ में अधिकाँश महिलाओं ने संयुक्त परिवार के प्रति अभिरूचि जतायी है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों से आम महिलाओं पर पाश्चात्य संस्कृति एवं आधुनिकता के प्रभाव के संदर्भ में 87 प्रतिशत महिलाओं ने सकारात्मक राय व्यक्त की है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों के माध्यम से कुप्रथाओं पर आधारित कार्यक्रमों को 90 प्रतिशत महिलाओं ने उचित माना है क्योंकि उनका मानना है कि यह समाज का वास्तविक रूप प्रदर्शित करता है। महिलाओं का मानना है कि इस बात से कोई भी दर्शक इन्कार नही कर सकता कि जितना सार्थक सहयोग दूरदर्शन ने परिवार नियोजन, जनकल्याण की योजनाओं, टीकाकरण, महिलाओं का स्वास्थ्य एवं अन्य सामाजिक मुद्दों को प्रचारित-प्रसारित किया है वह अपने आप में अद्वितीय है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों को हमारे समाज के विकास के संदर्भ में 55 प्रतिशत महिलाओं ने सहमति जतायी है।

दूरदर्शन संचार का सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से प्रसारित कार्यक्रमों का समाज पर किसी न किसी रूप में प्रभाव अवश्य पड़ता है। इस बात की पुष्टि अध्ययन के आधार पर साबित हो रही है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में दूरदर्शन अपने प्रमुख उद्देश्यों पर खरा उतरा है क्योंकि दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में वार्ता, परिचर्चा, साक्षात्कार एवं विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को जागरूक एवं उनके अधिकारों को जानने के गुरूमंत्र बताये जाते हैं। वर्तमान में व्यावसायिकता अपने चरम पर है जिससे दूरदर्शन भी अछूता नहीं है। भारत अपनी संस्कृति और परम्परा के लिए पूरे विश्व में जाना और पहचाना जाता है। ऐसे में बाजारवाद से ऊपर उठकर दूरदर्शन को नारी के प्रति भारतीय संस्कृति में प्राप्त स्थान को अक्षुण्ण रखने में अनवरत भूमिका निभाते रहना होगा। डॉ0 रश्मि गौतम का यह शोध एक प्रसंशनीय प्रयास है जिसके माध्यम से उन्होंने भारतीय

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

परिवारों की धुरी महिलाओं पर केन्द्रित यह शोध कार्य किया। अकादमिक स्तर पर किये गये इस शोध कार्य से जहाँ दूरदर्शन के कार्यक्रम अधिकारियों की महिलाओं के रूझानों के बारे में जानकारी मिल सकती है वहीं निर्माताओं को भी दिशा मिलेगी कि किस प्रकार के कार्यक्रमों का निर्माण किया जाना चाहिये। इस शोध से यह भी साबित होता है कि महिलाएँ केवल मनोंरजनपरक कार्यक्रम हीं नहीं देखती बल्कि समाचार, राजनैतिक घटनाओं, स्वास्थ्य एवं अन्य सूचनापरक कार्यक्रमों को भी देखती हैं। शोध से यह भी परिणाम प्राप्त हुआ है कि महिलाओं पर कार्यक्रमों का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पड़ता है। ऐसे में दूरदर्शन को चाहिये कि वह सकारात्मक पात्रों, घटनाओं और आदर्श चरित्रों को सबल रूप में दर्शकों के सामने रखे। अक्सर धारावाहिकों में दिखाया जाता है कि नीति, धर्म और सत्य पर चलने वालों का अनाचारी लोग शोषण करते हैं। भले ही अन्त में एक ऐपिसोड में दिखाया जाये कि सत्य की सदैव विजय होती है। ऐसे में जब कोई नकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत 100 से अधिक ऐपिसोड देख चुका होगा तो उस पर नकारात्मकता का प्रभाव अधिक हावी रहेगा। जनसंचार एवं पत्रकारिता के छात्रों के लिये भी यह शोध बहुपयोगी है। इसमें प्रयुक्त शोध प्रविधि के माध्यम से वे कई अन्य सम विषयों पर कार्य कर सकते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research